11

आदमी जिसका जीवन आशीषित हुआ

(2 राजाओं 5:1-17)

बाइबल जीवन का दर्पण दिखाती है। इसके पन्नों के ऊपर चलते हुए रंगदार व्यक्तित्वों को देखकर हम अपने आस पास के लोगों को और अपने आपको देखे बिना नहीं रह सकते। नामान की कहानी में नामान के बीमार होने, चंगाई की तलाश करने और परमेश्वर की ''दवाई की पर्ची'' सूट न करने में जान पहचाने प्रभाव देखते हैं। उम्मीद है कि नामान की तरह ठण्डा होकर अन्त में उपचार को स्वीकार करने की तरह हम कुछ लोगों को भी देखते हैं।

इलाज (5:1)

''और वह कोढ़ी था''

कहानी का आरम्भ नामान के विवरण होता है। वह ''अराम के राजा का सेनापति'' था (आयत 1क)। हम उसे ''अशोक चक्र लगा जरनैल'' की तरह मान सकते हैं। वह ''अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा'' आदमी था (आयत 1ख)। बर्कले के संस्करण में उसे ''महत्वपूर्ण अधिकारी'' कहा गया है। वह ''प्रतिष्ठित पुरुष'' थी था (आयत 1ग)। जैसा कि हम देखेंगे कि वह अपने मातहत लोगों में भी सम्मानित और शायद प्रिय था। ''यहोवा ने उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था'' (आयत 1घ)। परमेश्वर ने उसके द्वारा काम किया था चाहे वह एक अविश्वासी ही था। वह ''शूरवीर था'' (आयत 1ङ)। वह पीछे बैठकर आज्ञा देने वाला कमाण्डर नहीं था। उसने लड़ाई में अपनी बहादुरी साबित की थी।

हम नामान से द्वेष करने के लालच में पड़ सकते हैं जब हम छोटे से शब्द ''परन्तु'' तक नहीं आते। दूसरे के बारे में हमारी धारणा से वह छोटा सा विरोधसूचक संयोजक बदल सकता है!

- ''वह 'अच्छा आदमी' है *परन्तु* उसे गुस्सा बड़ी जल्दी आता है।''
- ''वह 'अच्छी औरत' है *परन्तु* वह अपनी जुबान को काबू में नहीं रख सकती।''
- ''उसमें अद्‌भुत योग्यता है और प्रभु का महान सेवक बन सकता है, *परन्तु* वह संसार को छोड़ना नहीं चाहता।''
- ''वह 'अच्छा प्रचारक' है *परन्तु* उसका जीवन वैसा नहीं है जैसा वह प्रचार करता है।''

नामान के विवरण के अन्त में ध्यान दें: ''परन्तु कोढ़ी था'' (आयत 1च)। यह तो ऐसा है जैसे किसी कलाकार ने एक बहुत सुन्दर चित्र बनाया और फिर ब्रश को काले पेंट में डुबोकर उस चित्र के ऊपर फेर दिया जिससे उसकी सुन्दरता नष्ट हो गई।

कोढ़ प्राचीन जगत में सबसे भयंकर बीमारियों में से एक था। इस्राएल में कोढ़ी ''अशुद्ध, अशुद्ध'' (लैव्यव्यवस्था 13:45ख) पुकारते थे और लोग उनके रास्ते से हट जाते थे। कोढ़ के पहली बार दिखाई देने पर यह त्वचा पर धब्बा सा लगता था, परन्तु धीरे-धीरे सारा शरीर बेरंग हो जाता था। शरीर के छोरों के ऊपर गांठें बन जाती थीं। बड़ी होने पर वे जोड़ों तक को प्रभावित कर देती थी। किसी कोढ़ी को बिना ऊंगलियों, पांव की उंगलियों, कानों या यहां तक कि नाके बिना देखना आम बात थी।

नामान के शरीर पर कितनी भी गांठें हों पर एक बात पक्की है कि वह कोढ़ी था। उसके साथ द्वेष करने के बजाय अराम में छोटे से छोटा गुलाम भी उसके साथ व्यवहार करने से इनकार कर देगा।

''पर तू एक पापी है''

क्या आज हम इसकी प्रासंगिकता बना सकते हैं ? कलीसिया के आरम्भिक दिनों से ही कोढ़ को पाप का रूपक माना जाता है। वारेन वियर्सबे ने लिखा:

> चाहे वचन में ऐसी कोई सीधी बात नहीं है कि कोढ़ पाप की तस्वीर है, पर जब आप लैव्यव्यवस्था 13 पढ़ते हैं तो आप इसमें साफ़ समानता देख सकते हैं। कोढ़ की तरह पाप त्वचा के नीचे तक है (आयत 3), यह फैलता है (आयत 7), यह अशुद्ध करता है (आयत 47), यह अलग करता है (आयत 46), और यह केवल जलाने के योग्य है (आयतें 52, 57)।[1]

अन्यों से समानताओं पर ध्यान दिया है। नीचे दी गई टिप्पणियां एफ. बी. क्रमचर से ली गई थीं:

> इससे अधिक चौंकाने वाला और महत्वपूर्ण पाप का प्रतीक हमें शायद ही कहीं और मिले। साधारण माध्यम से इसका असाध्य होना हमें अपने आप को बचाने की हमारी अयोग्यता का संकेत देता है। इसका संक्रामक होना एक पापी के दूसरे पर बुरे प्रभाव को दर्शाता है। इसे की जाने वाली घृणा हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर की दृष्टि में हर पाप कितना घृणित है। कोढ़ की महामारी से ग्रस्त व्यक्ति को इस्राएली लोगों के डेरे से निकाल दिया जाता था और उन्हें उनसे अलग कर दिया जाता था।[2]

यशायाह नबी के मन में कोढ़ की बात ही होगी जब उसने इस्राएल के पापी होने की बात लिखी: ''नख से सिर तक कहीं भी कुछ आरोग्यता नहीं, केवल चोट और कोड़े की मार के चिन्ह और सड़े हुए घाव हैं'' (यशायाह 1:6)।

बेशक कोढ़ और पाप में अन्तर हैं। कोढ़ लोगों की छोटी सी आबादी को प्रभावित करता है जबकि पाप अपने कामों के लिए ज़िम्मेदारी सब लोगों को भ्रष्ट करता है (रोमियों 3:23)। फिर किसी को कोढ़ हो जाने पर उस व्यक्ति को और दूसरों को शीघ्र पता चल जाता था, बल्कि आज कई लोगों को पता ही नहीं होता कि वे पापी हैं जिसे परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है।

यदि आपने अपने आपको प्रभु के अनुग्रह से गिराया नहीं है, तो अपनी आत्मिक स्थिति पर

विचार करें। पौलुस ने मसीह से पूर्व के अपने जीवन को इन शब्दों में व्यक्त किया है: ''क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, ... क्योंकि जिस अच्छे काम की इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं'' (रोमियों 7:18, 19)। क्या आप पौलुस के शब्दों में अपने आपको देख सकते हैं? क्या आप कभी ऐसी भलाई करने में नाकाम रहे हैं जिसे आप करना चाहते हैं? क्या आपको कभी अपने या किसी काम पर शर्म आई है? बाइबल इन चीज़ों को ''पाप'' कहती है और बाइबल घोषणा करती है कि ऐसे पाप आपकी आत्मा को दोषी ठहरा सकते हैं (रोमियों 6:23)।

नामान में बहुत से अच्छे गुण थे, पर इस एक दुखद तथ्य के प्रकाश में वे सब छोटे थे: ''परन्तु कोढ़ी था।'' आप कई सराहनीय खूबियों वाले पुरुष ... या स्त्री ... या युवक हो सकते हैं; परन्तु आपके अनादि भविष्य के सम्बन्ध में यह सब सकारात्मक गुण केवल एक अपरिहार्य सच्चाई से दूर हो जाते हैं कि ''परन्तु आप तो पापी हैं।'' यदि नामान अपनी स्थिति से अवगत न होता तो वह कभी नबी से मिलने के लिए न जाता। इसी प्रकार जब तक आप मानने को तैयार नहीं हैं कि आप एक पापी अर्थात खोए हुए हैं और अपने आपको बचा नहीं सकते तब तक आप उद्धार के लिए प्रभु के पास कभी नहीं लौटोगे।

''दवाई की पर्ची'' (5:2-12)

सिफ़ारिश

आयत 2 हमें एक छोटी इब्रानी नौकरानी से परिचित करवाया जाता है: ''अरामी लोग दल बान्धकर इस्राएल के देश में जाकर वहां से एक छोटी लड़की बन्धुवाई में ले आए थे'' (आयत 2क)। किसी बच्चे की सामर्थ और प्रभाव को कभी कम न जानें। कई माता-पिता अपने बच्चे की इस विनती से प्रभावित हुए हैं कि ''मम्मी, कृपया मेरे साथ चर्च चलो!''; ''डैडी प्लीज़ सिग्रेट/बीड़ी छोड़ दो!''

यह छोटी यहूदी लड़की ''नामान की पत्नी की सेवा करती थी'' (आयत 2ख)। उसके पास उदास और प्रसन्न होने, अपनी मालकिन से घृणा करने और शायद अपने विश्वास से फिर जाने का हर कारण था। उसने इन में से कोई बात नहीं की। बदला लेने की इच्छा करने के बजाय उसे नामान पर तरस आया (देखें रोमियों 12:19-21)। एक दिन उसने अपनी मालकिन से कहा, ''जो मेरा स्वामी शोमरोन के भविष्यवक्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता! क्योंकि वह उसको कोढ़ से चंगा कर देता'' (2 राजाओं 5:3)। ''शोमरोन का भविष्यवक्ता'' एलीशा था। उस दासी का विश्वास बरकरार था और वह नामान को बताना चाहती थी कि उम्मीद खत्म नहीं हुई!

यदि आप अभी तक परमेश्वर की ओर वापस नहीं आए हैं तो आपके लिए इस बात को समझना आवश्यक है कि आप खोए हुए हैं; पर आपके लिए यह जानना भी आवश्यक है कि *उम्मीद* है। शुद्ध किया जाना यीशु के लहू के द्वारा (प्रकाशितवाक्य 1:5; देखें 1 यूहन्ना 1:7) उपलब्ध है (देखें आयतें 15:3; इफिसियों 5:26)! पौलुस ने लिखा:

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष से आशीष दी है। ... हम को उस में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है (इफिसियों 1:3-7)।

हो सकता है कि आपने यह सच्चाई सबसे पहले किसी बच्चे से या किसी मित्र से या किसी पड़ोसी से सुनी हो या आप इसे पहली बार सुन रहे हों। जिससे भी सुनी आप इस पर विश्वास करें।

दिल के दाग को धोवे कौन?
लहू जो कि क्रूस से जारी;
मेरे मरज़ को खोवे कौन,
लहू जो क्रूस से जारी।[3]

जब आप प्रेम करने वाले, भरोसा करने वाले आज्ञापालन (देखें गलातियों 3:26, 27) में प्रभु के पास आते हैं तो आपके पाप उस बहुमूल्य लहू में ''धुल जाएं'' गे (प्रेरितों 22:16; देखें मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)!

नामान को उस छोटी दासी की बातें बताई गईं और उसने वही बातें राजा को बताईं (2 राजाओं 5:4)। यह तथ्य कि उस छोटी लड़की की टिप्पणी को गम्भीरता से लिया गया उसके स्वभाव के बारे में बहुत कुछ कहता है। हो सकता है कि उसे उसके परिवार और उसके लोगों से अलग किया गया हो, पर उसका व्यवहार अभी भी परमेश्वर के बालक के रूप में था। उसने अपनी निष्ठा बनाए रखी!

प्रत्युत्तर

जल्दी-जल्दी तैयारी की गई। शीघ्र ही नामान इस्राएल के राजा के नाम पत्र के साथ सैकड़ों पौंड बहुमूल्य धातुओं के अलावा दमिश्क की बेहतरीन दुकानों में कपड़ा लेकर निकल पड़ा (आयत 5)। नामान को अपनी यात्रा आरम्भ करते हुए देखकर मुझे अपने उद्धार के सम्बन्ध में की जाने वाली लोगों की आम गलतियों पर ध्यान आता है। नामान की मूल गलती यह थी कि *उसने परमेश्वर की इच्छा को मनुष्य के ढंग से करने की कोशिश की*। उदाहरण के लिए, उसने सोचा कि वह अपना इलाज खरीद सकता है। बहुत से लोग आज सोचते हैं कि वे भले कामों के द्वारा अपने उद्धार को ''खरीद'' या ''कमा'' सकते हैं, परन्तु कोई भी इतना भला या इतना भला काम करने वाला नहीं हो सकता कि वह अपने उद्धार को कमा सके (देखें इफिसियों 2:8, 9; प्रकाशितवाक्य 22:17)। इसके अलावा नामान गलत आदमी यानी नबी के बजाय राजा के पास जा रहा था (देखें 2 राजाओं 5:6)। इसी प्रकार बहुत से लोग गलत धार्मिक अधिकारियों यानी परमेश्वर के अनश्वर वचन के बजाय मनुष्यों की नाशवान परम्पराओं के पास जाते हैं (देखें मत्ती 15:1-9)।

जब नामान और उसका दल बल सामरिया में पहुंचा, तो आराम के राजा ने पत्र इस्राएल के राजा को सौंपा गया। यह एक संदेश था कि ''जब यह पत्र तुझे मिले, तब जानना कि मैं ने

नामान नाम के अपने एक कर्मचारी को तेरे पास इसलिये भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दे'' (2 राजाओं 5:6)। ''इस पत्र के पढ़ने पर इस्राएल का राजा अपने वस्त्र फाड़कर बोला, क्या मैं मारने वाला और जिलाने वाला परमेश्वर हूं कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को इसलिये भेजा है कि मैं उसका कोढ़ दूर करूं?'' (आयत 7क)। राजा को उसमें कोई छुपी हुई मंशा दिखाई दी क्योंकि उसे लगा कि अराम का राजा उसके साथ लड़ाई का बहाना ढूंढ़ रहा है: ''सोच विचार तो करो, वह मुझ से झगड़े का कारण ढूंढ़ता होगा'' (आयत 7ख)।

यहां हमें पता चलता है कि क्या होना *चाहिए* था। राजा को हंसते हुए यह कहना चाहिए था, ''तारीफ़ के लिए शुक्रिया, पर मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकता। आपको नबी एलीशा के पास जाना पड़ेगा जो नगर के बाहर एक छोटी सी कुटिया में रहता है।'' स्पष्टतया यह सम्भावना उस पर नहीं हुई। एक छोटी दासी को परमेश्वर के नबी का ध्यान आया पर परमेश्वर के लोगों के ऊपर राजा को नहीं।

उपचार

राजा की निराशा की बात एलीशा तक पहुंची और नबी ने नामान को अपने पास आने का संदेश दिया (आयत 8)। ''तब नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ'' (आयत 9)। क्या आपको नबी की कुटिया के पास घोड़ों की टाप, रथों की खड़खड़ाहट, चमड़े की चरचराहट और अवाज़ों अवाज़ों की फुसफुसाहट सुनाई दी? क्या आपको चमकदार वस्त्र, शाही लिबास पहने, धातु और चमड़े के हथियार और टोप पहने अपनी प्रतापी उपस्थिति को स्वीकार करने के लिए नबी के बाहर आने की प्रतीक्षा करते नामान को घमण्ड में अपने रथ मैं बैठे देखा?

एलीशा अपने कमरे से बाहर नहीं निकला। नामान ने अपने पहुंचने की घोषणा करने की तुरही भी बजवाई होगी। फिर भी कुछ नहीं हुआ। अन्त में दरवाज़ा खुला और उसमें से एक आदमी बाहर आया जो सेवक लग रहा था (आयत 10क)। मैं उसकी कल्पना खुदी दाड़ी, फटे हुए पैबन्द लगे कपड़े पहने आदमी के रूप में करता हूं। दूत ने नामान से कहा, ''तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा'' (आयत 10ख)।

एलीशा स्वयं बाहर क्यों नहीं आया? हो सकता है कि वह किसी काम में व्यस्त हो, पर मुझे लगता है कि वह नामान के कोढ़ के साथ-साथ उसके घमण्ड की बीमारी का भी इलाज़ करना चाहता था। परमेश्वर द्वारा घृणा की जाने वाली चीज़ों में सबसे ऊपर घमण्ड ही है (नीतिवचन 6:16-19; देखें KJV)।

प्रतिक्रिया

क्या नामान उस आदेश को सुनकर बहुत आनन्दित हुआ? नहीं, वह बहुत ''क्रोधित'' हुआ (2 राजाओं 5:11क)। NIV में उसे ''क्रोध आया'' और CEV में वह ''आग बबूला हुआ है।'' बचपन में जब में ओक्लाहोमा में रहता था, तो हम इसे यूं कहते थे कि नामान को ''उन्माद का दौरा पड़ा''; हो सकता है कि आपके यहां भी ऐसी ही प्रक्रिया के लिए कोई बात प्रसिद्ध

हो। नामान सब कुछ भूलकर घर लौट जाना चाहता था (आयत 11ख)। वह आराम से अपना खराब शरीर लेकर निकला था और अब उसे उसी स्थिति में वापस लौट जाना था। उसके लिए कितना दुखद है।

नामान ने कहा, ''अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा!'' (आयत 11ग)। उसने सोच रखा था कि नबी कोई मन्त्र पढ़ेगा और अराम में रहने वाले झूठे नबी की तरह रहस्यमय तरह से हाथ हिलाते हुए उसे ठीक कर देगा। नामान की तरह अभी भी ''परमेश्वर की इच्छा मनुष्य के ढंग से करने'' में था।

''मैंने तो सोचा था'' किसी को परेशानी में डाल सकता है। जब मैं लड़का था तो मैंने कुछ पटाखे खरीदे। एक पटाखे के मुंह पर हवाई थी। ''मैंने तो सोचा था'' की हवाई घूमकर उस पटाखे को *आगे* ले जाएगी। मैं अपने आंगन में पटाखे फोड़ रहा था, जिसमें काफ़ी पेड़ थे और थोड़ी सी खुली जगह थी। मैंने खुले क्षेत्र की ओर करके हवाई पटाखे पेड़ के नीचे रख दिए और आग लगा दी। ऊपर जाने के बजाय पटाखा *सीधा ऊपर,* जाकर पेड़ की टहनी को लगा, घूमकर नीचे आया, ज़मीन पर लगकर मेरी टांगों के बीच में रुक गया और फट गया। ''मैंने तो सोचा था'' का परिणाम मेरी जीन में दो छेद के साथ जलने के दाग हुआ जो आज तक है।

सलाहकार नामान के विचारों को ''अपने आप बातें करना'' कहेंगे जिसमें व्यक्ति अपने आप से करता है। यदि आपका ''अपने आप से बात करना'' गुमराह करने वाला और गलत है तो बहुत हानी पहुंचा सकता है। मैंने दुखी लोगों से बात की जिनके कहने का अर्थ था, ''मैंने तो सोचा था कि शादी हो जाएगी तो [ऐसा या वैसा] होगा।'' मैंने और दुखी लोगों बात की है जिनका कहना कुछ इस प्रकार था: ''मैंने तो सोचा था कि यह नौकरी मिलने पर ... या यह बच्चा होने पर ... या मेरे प्रचार करने आरम्भ करने पर... मेरे हालात बदल जाएंगे।'' परन्तु सबसे बड़ी त्रास्दी यह है कि जब लोग भ्रमित ''अपने आप बातें करना'' में लगे हों जैसे हां मुझे मालूम है [यह या वह] कहती है। परन्तु ''*मुझे लगता है* कि मुझे अपने माता पिता या प्रचारक की बात को मानना चाहिए।'' डोनल्ड बार ने कहा है, ''हर किसी को परमेश्वर के ढंग से स्वर्ग में जाने या अपने ढंग से नरक में जाने का हक है।''[4]

नामान डीगें मारता रहा: ''क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उन में स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूं?'' (आयत 12क)। जिन्होंने संसार के उस भाग की नदियां देखी हैं वे मानेंगे कि दमिश्क के ''सुनहरी चश्मे''[5] कीचड़ भरे यरदन से बेहतर होंगे। नामान ने इस अवसर को नबी की बात मानकर अपने घमण्ड को पीने या न पीने की परीक्षा के बजाय इसे नदियों के बीच मुकाबले के अवसर में बदल दिया।

युगों से धार्मिक दायरों के बीच में नामान की यह गलती दोहराई जाती रही है: ''बड़ा होने पर प्रभु का इनकार करने का मौका देने के बजाय बच्चे को 'बपतिस्मा देना' बेहतर है''; ''लोगों को डुबोकर पूरा गिला करने के बजाय 'बपतिस्मा देने' के लिए पानी की कुछ बूंदें इस्तेमाल करना बेहतर है।'' नामान और वही गलती दोहराने वाले सब लोगों के लिए मेरा सीधा सा जवाब है कि जो कुछ परमेश्वर ने करने की आज्ञा दी है, उसी के ढंग के अनुसार करने से ''बेहतर'' और

कुछ नहीं है (मत्ती 7:21; लूका 6:46; देखें यशायाह 55:8, 9)!

''इसलिए [नामान] जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया'' (आयत 12ख)। उसे एलीशा के घर से निकलकर उसके महत्व को स्वीकार न कर पाने से अपमान लगा होगा। उसे यह सुझाव बेकार लगा होगा कि वह अपनी श्रेष्ठता को गंदे पानी में डुबो दे। वह ''डॉक्टर'' के पास गया था, पर उसे उसकी ''पर्ची'' अच्छी नहीं लगी जिस कारण उसे गुस्सा आ गया। पर उसके क्रोध से वास्तविकता बदली नहीं यानी वह अभी भी ''जीवित मृत्यु'' से दुखी था।[6] मैं बाथरूम में पपड़ियों से नाराज़ हो सकता हूं पर इससे भारी होने की मेरी समस्या खत्म नहीं हो जाएगी। बैरोमीटर पर नाराज़ होने पर तुफ़ान थम नहीं जाएगा। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि सुसमाचार प्रचारक पर नाराज़ होने से यह तथ्य बदल नहीं जाएगा कि आप एक पापी हैं जिसे यीशु में भरोसा करने और अपना जीवन उसे देने की आवश्यकता है।

इलाज (5:13-17)

परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा शुद्ध हुआ!

नामान की तीर्थ यात्रा विनाश की ओर बढ़ रही थी। ''तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे'' (2 राजाओं 5:13क)। उन्होंने कहा, ''हे हमारे पिता यदि भविष्यवक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिए'' (आयत 13ख)। यह तथ्य कि सेवकों ने बात की, उनके विषय में कुछ कहता है कि उन्हें अपने स्वामी की परवाह थी। यह नामान के साथ उनके सम्बन्ध और स्वयं नामान के बारे में भी काफ़ी कुछ कहता है। कई स्वामियों ने इस ''हस्तक्षेप'' पर कड़ी आपत्ति की होती और इस प्रकार से बात करने की सज़ा ''ज़ोर से'' दी होती। पर इन सेवकों को लगा कि नामान के साथ बात कर सकते हैं और वह उनकी सुनने को तैयार था।

एक अर्थ में उन्होंने कहा, ''अगर नबी ने आपको अपने किसी घोर शत्रु से दो हाथ करने या जंगली जीवों के साथ लड़ने को कह दिया होता तो? यदि वह आप से अपने परमेश्वर के नाम कर सोने का बड़ा स्तम्भ बनाने को कहता तो? क्या आप अपने आपको दूर करने के लिए *कुछ भी* करने को तैयार न होते? तो फिर यह छोटी सी बात जो उसने करने को कही है, करने में क्या दिक्कत है?''

मेरे लिए यह रहस्य की बात ही रही है कि कुछ लोग पाप के दोष से मुक्त होने के लिए कुछ भी और किसी भी हद तक करने, यानी कुछ भी करने को तैयार होते हैं, सिवाय प्रभु की आसान सी आज्ञाओं को मानने के।

> पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे (प्रेरितों 2:38)।
>
> अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल (प्रेरितों 22:16)।

> क्योंकि तुम सब उस विश्वास करबे के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलातियों 3:26, 27)।

अगर परमेश्वर आप से ''कोई बड़ी बात'' करने को कहे तो क्या आप उसे नहीं करेंगे? ''तो फिर जब [वह] आप से कहता है, नहा ले और शुद्ध हो जा, तो यह कितनी बड़ी बात है?''

सेवकों की बातों से नामान को मानना पड़ा कि इलाज के बताए उपचार को आजमाए बिना घर जाना मूर्खता होगी। इस कारण वह यरदन नदी में ''उतरा'' (2 राजाओं 5:14क)। क्या आप उसे अपने कपड़े उतार कर यरदन के किनारे खड़े होने और पानी में जाते देखने की कल्पना कर सकते हैं! उसने पानी में डुबकी लगाई और सीधा खड़ा हो गया। उसने अपनी बाहों और अपनी छाती के ऊपर अपनी त्वचा पर नज़र डाली पर त्वचा अभी भी कोढ़ से भरी हुई थी। शायद उसके चहेरे छाई उदासी को देखकर किसी सेवक ने किनारे पर से आवाज़ दी, ''अभी तो एक की डुबकी हुई है! नबी ने *सात बार* कहा था।''

वचन यह संकेत देता है कि जब नामान ने एक बार डुबकी लगाई तो वह सातवां भाग और दूसरी डुबकी पर दो को सातवां शुद्ध नहीं हुआ, बल्कि शुद्ध होने के लिए उसे सात डुबकियां लगानी पड़ीं। क्रमचर ने सुझाव दिया है कि ''उसने एक डुबकी लगाई, पर कुछ नहीं हुआ, दूसरी लगाई पर कोढ़ ठीक नहीं हुआ। फिर तीसरी, चौथी और पांचवीं और छठी पर नतीजा नहीं''[7] जी. रॉलिन्सन ने लिखा, ''बिना किसी परिणाम के छह बार औपचारिक कार्य को करना और फिर सातवीं बार भी उसे दोहराने के लिए विश्वास और भरोसे के उस दर्जे की आवश्यकता थी। जो आम तौर पर लोगों में मिलती नहीं है।''[8]

मैं सेवकों के किनारे पर खड़े होकर गिनती करने की कल्पना करता हूं, ''एक ... दो ... तीन ...।'' अन्त में नामान सातवीं बार पानी के अन्दर गया। वचन कहता है कि ''तब उस ने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उस में सात बार डुबकी मारी'' (आयत 14ख)। जब उसने सातवीं बार पानी के भीतर गोता लगाया तो क्या उसके शरीर पर सिरहन महसूस होने लगी? क्या उसे अपनी नसों में जान आती महसूस हुई? क्या उसे नई ताज़गी महसूस हुई?[9] मुझे नहीं पता, पर वचन कहता है कि जब वह पानी में से बाहर आया तो, ''उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया[10]; और वह शुद्ध हो गया'' (आयत 14ग)। अगली बार आप किसी बच्चे को देखें तो उसकी कोमल, नाजुक मुलायम त्वचा पर ध्यान दें। नामान का शरीर ऐसा ही हो गया! एक लेखक ने ''नये नामान'' का वर्णन इन शब्दों में किया:

> ... उसका चेहरा चमक रहा [था] और उसकी आंखें जवानी की चमक और बल और खुशी से दमक रही थी; उसकी पपड़ी प्रलय के नीचे छूट गई थी और उसका बेकार मांस फिर से आ गया था, कोमल और स्वस्थ छोटे बच्चे की तरह, और सिर की चोटी से पांव की तली तक शुद्ध हो गया था![11]

नामान ने अपने कदम नबी की ओर बढ़ाए और यह मन को छू लेने वाला अंगीकार किया: ''अब मैं ने जान लिया है, कि समस्त पृथ्वी में इस्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है''

(आयत 15ख)। नामान को समझ आ गया था कि उसे पानी ने शुद्ध नहीं किया था। यदि कोढ़ को शुद्ध करने की शक्ति यरदन की नदियों में होती तो उसे संसार भर के कोढ़ियों की भीड़ में से निकलते हुए नदी तक पहुंचने का संघर्ष करना पड़ता। इसके बजाय उसे समझ आ गई कि उसका इलाज *परमेश्वर* अर्थात सच्चे परमेश्वर, जो इस्राएलियों का परमेश्वर है ने किया है और उसने केवल उसी की आराधना और सेवा करने की शपथ खाई (आयत 17ख)।

परमेश्वर के अनुग्रह से बचाया गया!

फिर हम प्रभु को अपने प्रत्युत्तर के सम्बन्ध में समानता बना सकते हैं। प्रभु पाप के ''कोढ़'' से श्रापित पानी को विश्वास करने (यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8), मन फिराने (लूका 13:3; प्रेरितों 17:30), यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करने (मत्ती 10:32; रोमियों 10:9, 10) और पानी में (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) बपतिस्मा (देखें रोमियों 6:3, 4) लेने को कहता है। इस जवाब में पापी व्यक्ति विश्वास करता है। क्या वह एक चौथाई भाग शुद्ध होता है? नहीं, प्रभु मन फिराने, अंगीकार करने और बपतिस्मा लेने के लिए भी कहता है। फिर वह मन फिराता है। क्या इससे आधा शुद्ध हो जाता है? नहीं, प्रभु अंगीकार करने और बपतिस्मा लेने के लिए भी कहता है। वह यह अंगीकार करता है कि यीशु ही मसीह है अर्थात जीवते प्रभु यीशु मसीह का पुत्र है। क्या वह तीन चौथाई भाग शुद्ध होता है? नहीं, प्रभु ने बपतिस्मा लेने की आज्ञा भी दी। परन्तु जब पापी व्यक्ति अपने मन में विश्वास के साथ बपतिस्मे की पानी रूपी कब्र में जाता और बाहर आता है (देखें रोमियों 6:3, 4)। उसके मन को छोटे बच्चे के मन की तरह शुद्ध करके धो दिया जाता है (प्रेरितों 22:16; देखें मत्ती 18:3)! उसे यीशु में नया जीवन मिला है (रोमियों 6:4); वह एक नई सृष्टि है (2 कुरिन्थियों 5:17)!

क्या इसका अर्थ यह है कि बपतिस्मे के पानी में सामर्थ है? जिस प्रकार से यरदन नदी के पानी में कोई सामर्थ नहीं थी वैसे ही बपतिस्मे के पानी में कोई सामर्थ नही है। शुद्ध करने का काम परमेश्वर करता है। केवल उसी के पास वह सामर्थ है और केवल उसी के पास यह अधिकार है। परन्तु परमेश्वर ने नामान को तभी शुद्ध किया *जब* नामान ने वह किया जो सेवक एलीशा ने उसे करने को कहा था, यानी बिल्कुल वही जो उससे कहा गया था। इसी प्रकार से परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह आपके पाप के दोष से शुद्ध कर देगा *जब* आप वही करेंगे जो आपसे करने को कहा गया है। यानी जो कुछ वह अपने वचन में कहता है।

सारांश

इस पर विचार करना कि परमेश्वर ने नामान को उसके कोढ़ का इलाज करने के लिए इस प्रकार कदम दर कदम काम किया, इससे भी बढ़कर उसे विश्वासी बनाने में। परन्तु किसी भी समय नामान उसकी योजना को लात मार सकता था। निर्णय लेने की घड़ी तक आपको लाने के लिए जो कुछ आपके जीवन में हुआ है उस सब पर विचार करें। क्या आपको इसमें प्रभु का हाथ दिखाई देता है यानी क्या आपको पता चलता है कि उसे आपकी प्रवाह है? परमेश्वर पाप के कोढ से आपका इलाज करना चाहता है (देखें 2 पतरस 3:9); पर जिस प्रकार नामान प्रभु की योजना को अपने लिए ठुकरा सकता था, वैसे भी आप भी ठुकरा सकते हैं। ग्वाइट एल. मुड़ी ने

लिखा है कि नामान ने ''अपना क्रोध खोया; फिर उसने अपना घमण्ड खोया; फिर उसने अपना कोढ़ खोया; आम तौर पर घमण्डी विद्रोही पापियों के मन परिवर्तन में यही क्रम होता है।''[12] यदि घमण्ड आपको पीछे कर रहा है, तो आज ही इसे छोड़ दें। आज भी यह सच है कि ''जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (लूका 14:11)। आज ही दीन, भरोसा रखने वाले आज्ञापालन में प्रभु के पास आ जाएं!

टिप्पणियां

[1]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिस्टिकंट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर, 2002), 37. [2]एफ. डब्ल्यू. क्रमचर, *एलीशा, ए प्रोफेट फ़ॉर अवर टाइम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 147. [3]राबर्ट लोरी, ''नथिंग बट द ब्लड,'' *सॉन्ग्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. व सम्पा. अल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लूइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [4]वियर्सबे, 38 से लिया गया। [5]हेनरी ब्लंट, *लैक्चर्स ऑन द हिस्ट्री ऑफ़ एलीशा* (फिलाडेल्फिया: हरमन हूकर, 1839), 93; जे. राबर्ट विनॉय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 532. [6]यह वाक्यांश चार्ल्स स्विंडल, नामान एंड गेहाजी: कैरैक्टरस इन कंट्रासट, रेडियो सरमनस ने लिया गया है। [7]क्रूमाचर, 149. देखें एलेन जे. फ्लेचर, *एलीशा, दि मिरेकल, प्रोफेट* (वाशिंगटन, डीसी: रिव्यू एंड हेरल्ड पब्लिशिंग एसोसिएशन, 1960), 48. [8]जी. रॉलिनसन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *1 एंड 2 किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 94. [9]यह और पिछला वाक्य दोनों का सुझाव क्रमचर, 150 की शब्दावली में दिया गा था। [10]यदि नामान ने कोढ़ के कारण किसी संकट को खोया था, तो वचन में यहां संकेत दिया गया होता कि वे भी ''बहाल'' हो गए थे। [11]क्रूमाचर, 150. [12]विर्यसबे, 39 से लिया गया।